आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2682 • उदयपुर, शुक्रवार 29 अप्रैल, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

श्रीकोलायत (राजस्थान) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षो से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 17 अप्रेल 2022 को पंचायत समिति परिसर, श्रीकोलायत में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता प्रधान पंचायत समिति, श्रीकोलायत बीकानेर रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 253, कृत्रिम अंग माप 24, कैलिपर माप 32 की सेवा हुई तथा 55 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् भंवर सिंह जी भाटी (ऊर्जा मंत्री राजस्थान), अध्यक्षता श्रीमान् प्रदीप कुमार जी चाहर (उपखण्ड अधिकारी, श्रीकोलायत), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् भंवर लाल जी सेठिया (प्रधान प्रतिनिधि, श्रीकोलायत), श्रीमती पुष्पा देवी जी सेठिया (प्रधान, श्रीकोलायत), श्रीमान् हरिसिंह जी शेखावत (उपखण्ड अधिकारी, श्रीकोलायत), श्रीमान् दिनेश सिंह जी भाटी (विकास अधिकारी, श्रीकोलायत) रहे। डॉ. नवीन जी (अस्थि रोग विशेशज्ञ), श्री नाथूसिंह जी शेखावत (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में श्री लालसिंह जी भाटी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश जी त्रिपाठी (शिविर सह प्रभारी), श्री बहादुर सिंह जी (सहायक), डॉ. रविन्द्र सिंह जी (जयपुर आश्रम फिजियो) ने भी सेवायें दी।

सूरत (गुजरात) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षो से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 16–17 अप्रेल 2022 को श्री सौराष्ट्र पाटीदार समाजवाड़ी, मिनी बाजार, वराछा, सूरत में संपन्न हुआ। शिविर सौजन्यकर्ता कलामंदिर ज्वैलर्स लिमिटेड, सूरत रहे। शिविर सहयोगकर्ता रोटरी क्लब ऑफ सूरत ईस्ट रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 170, कृत्रिम अंग वितरण 121, कैलिपर वितरण 041 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री कांतिभाई बलर (स्थानीय विधायक), अध्यक्षता श्री शरद भाई शाह (कलामंदिर ज्वैलर्स लिमिटेड), श्री समीरभाई बोघरा (पूर्व पार्षद), श्री चुनीभाई गजेरा (समाजसेवी), विशिष्ट अतिथि रो. संतोश जी प्रधान (डिस्ट्रिक्ट गर्वनर, रोटरी), श्री दामजी भाई काकडिया (उद्योगपति एवं समाजसेवी), श्री वि. एम.खूंट (सिल्वर ग्रुप, सूरत), श्री हिम्मतभाई धोलकिया (हरे कृष्णा डायमंड), श्री बाबूभाई नारोला (नरोला जेम्स), श्री रमेशभाई वघासिया (SGCCI उपप्रमुख), श्री प्रवीणभाई काकडिया (उद्योगपति एवं समाजसेवी), डॉ. निकुंज विठलानी (कैन्सर सर्जन), श्री महेशभाई खैनी (बिल्डर एवं समाजसेवी), श्री जयंतीभाई सांवलिया (उद्योगपति एवं समाजसेवी), रो. मनहर भाई वोरा (अध्यक्ष–रोटरी क्लब सूरत ईस्ट), रो. कीर्ति भाई खैनी (सचिव–रोटरी क्लब सूरत ईस्ट), रो. चिंतन भाई पटेल (शिविर संयोजक) रहे। डॉ. नेहा जी अग्निहौत्री (प्रोस्थेटिक एवं ऑर्थोटिक इंजीनियर), श्री भंवर सिंह जी शेखावत (टेक्नीशियन) सहित शिविर टीम में श्री मुकेश जी शर्मा, श्री अनिल जी पालीवाल, हरीश जी रावत, श्री कपिल जी व्यास, श्री देवीलाल जी मीणा ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर

दिनांक 01 मई, 2022

▪ रोटरी क्लब पाली, मैन रोड़, बापूनगर के पास, पाली (राजस्थान)

दिनांक 02 मई, 2022

▪ नागपुर (महाराष्ट्र)
▪ गजरोला, अमरोहा (उत्तरप्रदेश)

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन,नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

स्नेह मिलन समारोह
दिनांक : 1 मई, 2022

स्थान

होटल एस के रेजीडेन्सी, 418, अल्बर्ट रोड, केनाल ऑफिस के सामने अमृतसर, पंजाब, सांय 4.00 बजे

होटल सूर्या एण्ड बेंकेट हॉल, आदर्श कॉलोनी, रामपुर, उ.प्र., सांय 4.30 बजे

लॉयन्स क्लब, जलविहार कॉलोनी, मरीन ड्राइव के पास, रायपुर, छतीसगढ़, सांय 5.00 बजे

इस स्नेह मिलन समारोह में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

+91 7023509999
+91 2946622222

पू. कैलाश जी 'मानव'
संस्थापक चेयरमैन,नारायण सेवा संस्थान

'सेवक' प्रशान्त भैया
अध्यक्ष, नारायण सेवा संस्थान

www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

बच्चे की सीख

एक 9 साल का बच्चा आइसक्रीम की दुकान पर जाता है। वेटर–तुम्हें क्या चाहिये? छोटा बच्चा –मुझे आइसक्रीम लेने के लिए कितने पैसे देने होंगे? वेटर–15 रुपये/–तभी उस छोटे बच्चे ने अपना पॉकेट चेक किया, और फिर से किसी छोटे आइसक्रीम कोन की कीमत पूछी? तभी परेशान वेटर ने गुस्से में कहा– 12 रुपये लड़के ने छोटा कोन देने को कहा, आइसक्रीम का कोन ले लिया और बिल के पैसे दिए और वहाँ से चला गया। जब वेटर खाली प्लेट उठाने आया तब अचानक ही उसके आँखों से आंसू आने लगे। उस छोटे से बच्चे ने उस वेटर के लिए वहाँ 3रुपये टिप के रूप में रखे थे। "आपके पास जितना है उसमें से थोड़ा किसी और को देकर दूसरों को भी खुश करने की कोशिश कीजिये।" यही जीवन है। ऐसा नहीं है कि उस छोटे बच्चे के पास 15 रुपये नहीं थे, उसके पास पर्याप्त पैसे होने के बाद भी उसने अपने लिए छोटा कोन

लिया और 3 रुपये टिप देकर उस वेटर को खुश किया। जब हम जीवन में हमारे साथ–साथ हमारे आस–पास के लोगों की खुशी के बारे में भी सोचते हैं तभी हमारा जीवन सही मायने में जीवन कहलाने योग्य है। अपनी खुशी के लिए तो हर कोई काम करता है लेकिन महान वही कहलाता है जो दूसरों की खुशी के बारे में सोचता है।

चरित्र की सीढ़ियां

एक आदमी अपने हाथ में दो ऊंचे डण्डे लेकर एक महल की ऊपरी मंजिल पर चढ़ने का प्रयास कर रहा था। दूसरे आदमी ने देखा तो पूछा, "तुम यह क्या कर रहे हो?" वह बोला, "मेरे पास 'सम्यक् ज्ञान' और 'सम्यक् दर्शन' के दो डंडे हैं। मैं इनके सहारे इस महल की ऊपरी मंजिल पर पहुंचना चाहता हूं।" पहले ने कहा, "मैंने बड़ी मेहनत से इन्हें प्राप्त किया है। क्या सारा श्रम व्यर्थ जायगा?"

दूसरे आदमी ने कहा, "तुम्हारा श्रम व्यर्थ नहीं जाएगा, यदि तुम सम्यक् ज्ञान और सम्यक् दर्शन के इन दो खड़े डंडों में 'सम्यक् चरित्र' की आड़ी सीढ़ियां लगा सको।" 'सम्यक् ज्ञान' और 'सम्यक् दर्शन' के दो खड़े डंडों में 'सम्यक् चरित्र' की आड़ी सीढ़ियां लगाने से एक ऐसी नसैनी तैयार हो जाती है, जिस पर एक–एक कदम उठाकर आदमी अपने लक्ष्य तक पहुंच सकता है।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

संत एकनाथजी ने भूखे बच्चों को भोजन कर दिया था। और कुछ तथाकथित बुद्धिजीवियों ने कहा– अरे ! ये स्थान तो अपवित्र हो गया। कैसे अपवित्र हो गया? जिस स्थान पर भगवान के रूप में बच्चों ने भोजन किया है वो स्थान तो पवित्र हो जाता है। लेकिन जब तथाकथित बुद्धिजीवियों ने कहा– हम इस स्थान पर भोजन नहीं करेंगे। एकनाथजी की धर्मपत्नी ने कहा था– आप तो 21 पीढ़ी के पितरों को बुला दीजिये। कीजिये आवह्नान, दीजिये निमन्त्रण और 21 पीढ़ी के पितर आ गये, और उन्होंने संत एकनाथ को आशीर्वाद दिया था। ये कथा ज्ञानेश्वर की है जिन्होंने अपनी कमर पर किसे भैंसे को मारे हुए चाबुक की पीड़ा को अनुभव कर लिया था। इसी से इतनी योगशक्ति बढ़ गयी थी। जब उनकी बहन मुक्ता बहन ने कहा– भैया तीन दिन से इधन नहीं है, भोजन किस पर बनाऊं ? उकडू. हो के ज्ञानेश्वरजी बैठ गये। बहन मेरी पीठ पर रोटी सेक ले, और उनकी पीठ योगाग्नि से धधक के जलने लगी और पीठ पर रोटियाँ सिक गयी। ये कथा भले मानुषों की, ये कथा ज्ञान बढ़ाने की। ये कथा अपनी समझ बढ़ाने की, ये कथा संज्ञा को अच्छा करने की। अपने आप को पहचानिये।

ये ही बात सुग्रीवजी को भी सत्संग में कही थी। बन्धुओं, बहनों और माताओं सुग्रीव वानर था पर उसके भी ऐसी किडनी होती होगी, लीवर होता होगा। बाली का वध एक लीला है। भगवान ने कहा था– बाली तुमने बड़ी गलती की। तुम्हारे छोटे भाई की पत्नी को जबरदस्ती अपनी पत्नी बनाने का पाप किया है। ये बाली वध की कथा नहीं है, ये सुग्रीव की कथा नहीं है। ये हनुमान जी की कथा है, ये राम भगवान की कथा है। ये गुणों को बढ़ाने की कथा है, ये अवगुणों को छोड़ने की कथा है। ये दोनों के त्याग करने की कथा है।

जैसी दृष्टि : वैसी सृष्टि

विवेकानन्द जयपुर के पास एक छोटी रियासत में मेहमान थे। जिस दिन

विदा हो रहे थे उस दिन वहाँ के जागीरदार ने उनके विदाई समारोह में नाच गान का कार्यक्रम रखवा दिया। एक वेश्या भी बुलाई गई। विवेकानन्दजी को मालूम पड़ा तो वे बड़े हैरान और गुस्से से भर कर तम्बू में बैठे रहे, किन्तु समारोह में बुलाने पर भी नहीं गये।

वेश्या को ज्ञात हुआ कि स्वामीजी नहीं पधारे तो वह बड़ी दुःखी हुई और उसने यह भजन गाया। "एक लोहा पूजा में राखत–एक घर बधिक पर्‌यो, पारस अवगुन नहीं चितवत कंचन करत खरो।

प्रभुजी मेरे अवगुन चित न धरो।" अब तो विवेकानन्द सचेत हुए तथा सोचने लगे, यदि मुझे पारस समझा जा रहा है तब निश्चय ही मुझे भेद–अभेद किये बिना समारोह में जाना चाहिए और वे समारोह में गये। उन्होंने अपने संस्मरण में लिखा कि उस दिन मुझे लगा कि आज वास्तविक संन्यास का जन्म हुआ है क्योंकि वेश्या को देखकर मेरे मन में कोई आकर्षण, विकर्षण नहीं था। मेरा करुणा भाव ही जागृत हुआ उसे देखकर। जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि।

भुला देना चाहिए

छोटे भाई की बेटी का विवाह था। बड़े भाई छोटे भाई द्वारा वर्षों पूर्व कहे गए कुछ अपमानजनक शब्दों को लेकर उस विवाह में सम्मिलित नहीं हो रहे थे। छोटा अनुनय–विनय करके हार गया, तो किसी ने बताया कि बड़े भाई रोज जिन संत के पास सत्संग करने जाते हैं, उनसे मिले। संत ने छोटे भाई की सारी बात सुनी। दूसरे दिन बड़ा भाई संत से मिलने जब आया। उन्होंने बड़े को छोटे की कन्या के विवाह में शामिल होने को कहा। बड़े ने उसके व्यवहार की बात बताई। संत बोले–"अच्छा यह बताओ, पिछले रविवार को मैंने क्या प्रवचन दिया था?" बड़े ने कहा–"महाराज ! याद नहीं रहा। कोशिश करने पर भी ठीक से याद नहीं आ रहा।" संत बोले –"तो तीन वर्षों पूर्व कहे गए कटुवचन तुम्हें अब तक क्यों याद है। अगर अच्छी बातें याद नहीं हैं तो बुरी बातें क्यों सहेजकर रखी है?" बड़े भाई ने अपनी गलती जानी और विवाह का सारा प्रबंध उसने अपने जिम्मे ले लिया।

सम्पादकीय

मानना और जानना सामान्यतः समान अर्थ में ही प्रयुक्त होते हैं। वस्तुतः दोनों में मूलभूत अंतर है। मानना सरल है, जानना कठिन है। मानना परकीय है, जानना स्वकीय है। मानने का अर्थ है कि आपने कोई खोज नहीं की, जो किसी ने सुना, कहीं से पढ़ा और हमने उसे मान लिया। इस मानने में हमारा अपना योगदान क्या है? जिस बात में हमारा कोई योगदान या पुरुषार्थ नहीं वह तो परकीय ही है। जो पराया हे वह अपने उत्थान में क्या सहयोग करेगा?

जानने का आशय है, अनुभव करना। यह स्वानुभूत है। इसमें मैं और मेरा कार्य जुड़ा है। जैसे अग्नि तप्त होती है, यह माना भी जा सकता है और जाना भी।

यदि किसी ने केवल मान लिया तो वह न तो अग्नि के गुणधर्म को अनुभव कर सकेगा और न ही सदुपयोग। जो जानेगा वही तो उसके आदि–अंत को अनुभवेगा। यही बात ईश्वर के संबंध में भी है। मानना केवल तोतारटंत है तो जानना एक साधना। हम भी मानने से जानने की ओर चलें तो अपना भी कल्याण हो।

कुछ काव्यमय

जहाँ चाह, वहाँ राह
जिसने सत्य सहेजा और,
उतारा दिल पर।
वो सत्पथ पर चला,
वही पहुँचा मंजिल पर।
उसे मिला संतोष,
सुखी वह बनकर उभरा,
सुलभ सभी को मार्ग
किन्तु, हिम्मत हासिल कर।

सकारात्मक सोच

एक बहुत ही प्यारा शब्द है अगर हम उस शब्द की सार्थकता को अपनी जिन्दगी में उतार लें तो यकीन मानिए जिन्दगी बहुत आसान हो जाएगी.....

जी हाँ 'सकारात्मक सोच' जीवन हमारा विचारों से ही बना है, हम जिस तथ्य को जिस विचार से देखेंगे आप पाएंगे कि आपके विचार ही आपको सुखी या दुःखी कर रहे हैं.....

स्वयं को पूर्णतया सकारात्मकता की तरफ देखना चमत्कार की तरह नहीं हो सकता, इसके लिए अभ्यास की जरूरत रहेगी..... एक पल से शुरू कीजिए एक घंटे तक ले जाइए एक दिन पूरा.... सभी कुछ सकारात्मक सोचिए अपनी आदत में डालिए..... देखिए जीवन इतना प्यारा इतना आसान पहले कभी नहीं था....

पोलियो हॉस्पीटल का जब भी एक चक्कर लगाता हूँ मरीजों के पैरों में लोहे की छड़े डाली हुई हैं, निश्चित

रूप से इस वैज्ञानिक युग में भी उन लोहे की छड़ों ने अपना एहसास एक इन्सानी बदन में जरूर दर्द के रूप में दिलाया होगा परन्तु देखता हूँ, एक मरीज अपनी मां से बहुत हँस कर बात कर रहा हे कभी–कभार ठहाकों की आवाज भी सुनाई देती हैं.....

मैंने उस मरीज से पूछा बेटा दर्द नहीं होता क्या .....तो जवाब में फिर उसी मुस्कराहट के साथ बोलता है, बाऊजी परन्तु अपने पैरों पर चलने की बात सोचता हूँ तो दर्द स्वतः ही कम महसूस होने लगता है.... उस गरीब अशिक्षित दिव्यांग मरीज की सोच कभी हम शिक्षितों को भी बौना कर देती है जो छोटी सी परेशानी से निराश हो जाते हैं....

निवेदन है आपसे, जब भी आप खुद को तनाव में पायें या लगे कि हो रही है मुश्किल आगे बढ़ने में, या हो ईश्वर से शिकायतें, या लगे हे भगवान ! ये इतना बुरा मेरे साथ ही क्यों होता है... तो आइए "नारायण सेवा संस्थान" के पोलियो हॉस्पीटल में, मिलिये पोलियो पीड़ित दिव्यांगों से, उन मासूम बच्चों से जिन्हें सिर्फ हँसना या सिर्फ रोना आता है.....

आपको तनाव से राहत मिलेगी, व मिलेगी मुश्किलों में भी आगे बढ़ने की प्रेरणा .....व ईश्वर से भी कोई शिकायत नहीं रहेगी...खुद को दुनिया का सबसे खुशकिस्मत इंसान सिर्फ आप ही बना सकते हैं... अपनी सोच को सकारात्मक बनाकर....

– कैलाश 'मानव'

पाप का व्यवहार

एक बार महाकवि कालिदास घूमते–घूमते बाजार गए। बाजार में भीड़–भाड़ थी। उन्होंने देखा कि एक महिला एक बड़ा–सा मटका और कुछ प्याले अपने रखे हुए ग्राहको को जोर–जोर से आवाज देकर बुला रही थी। कालिदास महिला के पास गए और पूछा–तुम क्या बेच रही हो? महिला ने सहजता से उतर दिया– महाराज मैं पाप बेच रही हूं। महिला का उत्तर सुनकर कालिदास चौक गये और बोले–पाप और मटके में? तब महिला ने उत्तर

दिया– हां, महाराज जी, मटके में पाप है। कालिदास ने पुनः पूछा– कौनसा पाप है मटके में? तब महिला ने उत्तर दिया– मटके में आठ पाप हैं मैं आवाज लगाती हूं कि पाप ले जाओ, पाप ले जाओ और लोग रुपये देकर पाप ले जाते है। महिला की बात सुनकर कालिदास और अधिक अचम्भित हो गए और बोले– यह कैसी बात है कि लोग रुपये देकर पाप खरीदते है। महिला ने कहा– लोग पैसे देकर आठ तरह के पाप ले जाते है। अब कालिदास ने पूछा– कौनसे आठ पाप? महिला ने उत्तर दिया– क्रोध, बुद्धि नाश. पुण्य का नाश, स्वास्थ्य का नाश, धन का नाश, पत्नी और संतान के सथा अत्याचार, चोरी, असत्य आदि दुराचार रूपी पाप भरें हैं इसमें। महिला की बात सुनकर कालिदास को कौतुहल हुआ कि मटके में इस प्रकार के आठ पाप भी हो सकते हैं।

उन्होंने महिला से पूछा– अन्ततोगत्वा, इसमें है क्या? तब महिला ने कहा– इसमें मदिरा है। कालिदास महिला की कुशलता पर चकित रह गए।

मदिरा वास्तव में पाप की स्रोत है, यह बात तुम अच्छी तरह जानती हो और तुम यह बात कहकर बेचती भी हो, लेकिन फिर भी लोग रुपये देकर इसे ले जाते हैं। यह तो लोगों की नासमझी है।

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

कैलाश तो ऐसे अवसरों की तलाश में ही रहता था। एक शनिवार को वह बलवन्त सिंह मेहता के घर आयोजित सत्संग में भी पहुँच गया। वहां जब उसकी भेंट डॉ. दौलत सिंह कोठारी, जस्टिस राणावत और कर्नल बख्तावर सिंह जैसे मेवाड़ का नाम पूरे देश में रोशन करने वाली हस्तियों से हुई तो वह धन्य हो गया। इन सबके बारे में बहुत पढ़ सुन रखा था, जब इनके साक्षात् दर्शन हुए तो वह सबके चरणों में गिर पड़ा। जब कैलाश के सेवा कार्यों के बारे में इन सब विभूतियों को बताया गया तो ये सब भी प्रसन्न हुए। कैलाश को इन लोगों की बातें सुनकर कुछ न कुछ सीखने को ही मिलता। अब वह हर शनिवार इस सत्संग में भाग लेने लगा। सेन्ट्रल जेल में भी डॉ. आर.के. अग्रवाल सत्संग कराने लगे। वे सब कैदियों को कतार से बिठा देते और सबसे सामूहिक रूप से कीर्तन करवाते। कीर्तन के पश्चात् डॉ. अग्रवाल कैदियों को अत्यन्त सरल भाषा में उपदेश भी देते। कैलाश भी जब कभी इस दौरान वहां उपस्थित होता तो डॉ. अग्रवाल कैलाश को भी अपनी बात रखने का अवसर प्रदान करते। इसका परिणाम यह निकला कि धीरे–धीरे कैलाश का बोलने का भी अच्छा अभ्यास हो गया। वह कैदियों से उनके अनुभव और उनकी अनुभूतियां भी जानने लगा। इन तीन चार गतिविधियों के अनायास जुड़ जाने से कैलाश की व्यस्तताएं बढ़ने लगी, इसके बावजूद बीसलपुर जाने के उसके सिलसिले में व्यवधान उत्पन्न नहीं हुआ। एक बार राजमल जी भाईसा ने मुम्बई से मफतकाका द्वारा भेजे गए कपड़ों में से दो बोरे कपड़े उसे दिये और कहा कि उदयपुर में बांट देना। सभी कपड़े विदेशी थे जो मफतकाका को विदेश से मिलने वाली राहत सामग्री का हिस्सा थे। इतने बढ़िया कपड़ों की दो बोरियां मिल जाने पर कैलाश अत्यन्त उत्साहित था। बीसलपुर में तो सभी ने मिल कर बोरियां बस पर चढ़वा दी थी, बाली में बस बदलनी थी। यहां बोरियां बस से उतार कर वापस उदयपुर की बस में चढ़ानी थी। कोई हमाल या मजदूर नजर नहीं आ रहा था। बस से उतारने का काम तो आसान था, कैलाश ने खुद ही बस की छत पर चढ़ कर बोरियां नीचे पटक दी, कपड़े थे इसलिये किसी तरह की टूट फूट का खतरा भी नहीं था। असली कठिनाई वापस इन बोरियों को उदयपुर की बस में चढ़ाने की थी। उसने इधर–उधर देखा, बस कन्डक्टर से भी विनती की मगर कोई उसकी सहायता हेतु आगे आने को तैयार नहीं था। बड़ी मुश्किल से एक–एक करके दोनों बोरे उसी ने बस की सीढ़ी चढ़कर उपर पहुँचाए।

अंश - 079

खुशियों की बहार आई

मेरा नाम सोनू, उम्र 13 वर्ष है। मेरे पिता जी श्री प्रभुनाथ जी है। हम जिला सिवान बिहार के निवासी है। मेरे दोनों पैरों में पोलियो हो गया है। मेरे पिताजी ने मेरा काफी जगहों पर इलाज करवाया पर कहीं से भी विश्वास पूर्ण जवाब नहीं मिला।

एक दिन मैं सड़क पर घिसटते हुए चल रहा था कि एक व्यक्ति ने मुझे बोला कि तुम नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर में चले जाओ, और वहाँ पर निःशुल्क ऑपरेशन किया जाता है। मैं उससे संस्थान का पता लेकर घर गया, और घर वालों को बताया। मेरे पिता जी मुझे संस्थान में लाये। मेरे पैरों का ऑपरेशन हो गया। मैं अब अपने पैरों पर खड़ा हो सकता हूँ। मेरे जीवन में एक खुशी की बहार आ गयी है।

पीतल के घड़े स्वास्थ्य के लिए होते हैं लाभदायक

पुराने समय में पानी को पीतल के बर्तनों में भरकर रखा जाता था किंतु अब सस्ती प्लास्टिक की बोतलों ने महंगे पीतल को पीछे छोड़ दिया है। ऐडिनबरा में आयोजित सोसायटी फार जनरल माइक्रोबॉयलोजी की बैठक में वैज्ञानिकों ने बताया कि उनके शोध के अनुसार पीतल के घड़ों में जीवाणु नहीं पनपते। वैज्ञानिकों ने पीतल और मिट्टी के घड़ों में पानी भर कर इनमें कोलाई बैक्टीरिया के बीज डाले। यह जीवाणु पेचिश पैदा करने वाला सूक्ष्मजीवी हैं। शोधकर्ताओं ने 24 और 48 घंटे बाद इन जीवाणुओं की गिनती की। नतीजे चौंकाने वाले थे। पीतल के घड़े में जीवाणुओं की संख्या समय के साथ घटती चली गई और 48 घंटे बाद इनकी संख्या इतनी घट गई कि इन्हें गिना जाना संभव नहीं रहा। शोधकर्ताओं के अनुसार इन जीवाणुओं के नष्ट होने के कारण पीतल में पाया जाने वाला तांबा है जो पानी में घुलकर इन जीवाणुओं को नष्ट कर देता है। तांबे की मात्रा इतनी कम होती है कि वह शरीर को नुकसान नहीं पहुंचाती। अतः संभव हो सके तो पीने का पानी पीतल के घड़ों में रखें।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

सुहृदयता की मिसाल

लाल बहादुर शास्त्री केंद्रीय गृहमंत्री थे। उनके घर का एक दरवाजा जनपथ की ओर, दूसरा अकबर मार्ग की ओर था। एक बार दो श्रमिक स्त्रियाँ सिर पर घास का गट्ठर रखकर उस मार्ग से निकलीं तो चौकीदार ने उन्हें धमकाना शुरु किया।

उस समय शास्त्री जी अपने घर में बैठे कुछ कार्य कर रहे थे, उन्होंने सुना तो बाहर आ गए और पूछने लगे –'क्या बात है? चौकीदार ने सारी बातें बता दी। शास्त्री जी ने कहा –"क्या तुम्हें दिखता नहीं इनके सिर पर कितना बोझ है? ये निकट के मार्ग से जाना चाहती हैं, तो तुम्हें क्या आपत्ति है? जाने क्यों नहीं देते? शास्त्री जी कोमल हृदय इंसान थे।

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन

2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार

2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं

2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं

2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी

2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र

आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन

वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ

6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ

विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

बाबू जी ने रुपया दिया, नारायण सेवा के नाम से खरीदी गयी व उन्हें दस हजार रुपये प्रति महीने चुकाते रहे, बाद में उन्होंने कहा–बाबूजी क्या देना है? आपने जितना दिया है, बहुत है, नारायण सेवा मेरी है– आपकी है– सबकी है, भगवान की है, गरीबों का भला होता है।

एक दिन पाली मारवाड गये, वहाँ की धर्मशाला में सो गये थे, एक दिन रात के तीन बजे कहा बाबू जी रसीद निकालो, एक रसीद काटो, मैंने घड़ी देखी कमरे में उनके अलावा कोई नहीं था। मैंने कहा बाबू जी कौन दानदाता पधारे हैं? बहुत धन्यवाद है, बहुत बधाई है।

तन, मन, धन की शुद्वि मन बीच में बिठाया भगवान ने, मन अगर है तो तन भी लगेगा, मन अगर है तो धन भी लगेगा, मन के बिना कुछ नहीं होता। मन ही बन्धन करता है, मन ही बन्धनों को खोलता है, मन ही परेशान करता है, मन ही आनन्दित करता है।

अब तो अखण्ड आनन्द की जरूरत है, ऐसा सुख प्रतिक्षण रहे, ऐसी शान्ति जो प्रतिक्षण रहे। मैंने कहा–बाबू जी दानदाता पधारे हैं ? किनका नाम लिखूँ ? बोले के. एच. सेठ। बाद में पता चला करुण हृदयी सेठ खुद ने दिये– बोले–बाबू जी हाथों–हाथ ले लो, पी. जी. जैन साहब की आदत थी, जब भी घोषणा कर देते थे, उसी क्षण से ब्याज जोड़ देते थे, बोलते थे, जब मैंने घोषणा कर दी, अब मैं इस रुपये का कर्जदार हो गया। या तो मैं आज दूँ, या एक महीने बाद दूँ, डेढ रुपये सैंकड़ा के ब्याज से दूँ, कितने महान थे?

वही पी. जी. जैन साहब, जब कल्पना की सगाई तय हुई। अजमेर जाकर शादी करेंगे। पी. जी. जैन साहब ने मुझसे पूछा– कितने पैसे लगेंगे? किस तरह व्यवस्था करोगे? आपके पास पैसा है? मैंने कुछ कहा, उन्होंने सुना, उन्होंने मेरे बिना कहे, कुछ धन अच्छी मात्रा में दिया। मैंने मना किया, उन्होंने कहा–बाबू जी आप मना मत कीजिये, उस समय हम चेन्नई में थे, कमला जी को ड्रॉफ्ट बना कर भेज दिया, कहा– जब आपकी सुविधा होगी, तब दे देना। मन पर भार मत रखना। हम दोनों दो शरीर–एक प्राण हैं। कल्पना की शादी के लिए अजमेर के लिए निकले, गोरेगाँव महाड उसे कोंकण प्रान्त भी बोलते हैं।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 432 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023